कलत्रवन्तमात्मानमवरोधे महत्यपि ।

तथा मेने मनस्विन्या लक्ष्म्या च वसुधाधिपः ।।32।।

अन्वय वसुधाधिपः महति अवरोधे (सति) अपि मनस्विन्या तया लक्ष्म्या च आत्मानं कलत्रवन्तं मेने।

अनुवाद पृथ्वी के स्वामी (राजा) दिलीप बहुत.सी रानियों के होते हुए भी उदात्त मन वाली रानी सुदक्षिणा और राजलक्ष्मी से ही स्वयं को पत्नीवान् मानते थे।

टिप्पणियां

अवरोधः अवरुध्यते इति अवरोधः अवरुध घञ्। इस शब्द का अर्थ (1) राजा का महल तथा (2) महल में रहने वाली रानियाँ, दोनों ही लिया जाता है। रानियों के अर्थ में प्रयुक्त 'अवरोध' शब्द समूहवाचक संज्ञा का काम करता है, जैसे सेना, श्रेणी आदि शब्द।

लक्ष्म्या राजलक्ष्मी तथा पृथ्वी को राजा की पत्नी माना जाता है क्योंकि राजा राजकीय ऐश्वर्य का स्वामी और भोक्ता होता है। अतः दिलीप मनस्विनी सुदक्षिणा तथा राजलक्ष्मी को ही अपनी पत्नियाँ समझता था। जिस प्रकार दिलीप पृथ्वी को महत्त्व देता था वैसे ही सुदक्षिणा को। यह पद महारानी सुदक्षिणा के प्रति महाराज दिलीप की भावना का द्योतक है।

वसुधाधिपः वसुधायाः अधिपः (षष्ठी तत्पुरुष), पृथ्वी का स्वामी, अर्थात् राजा दिलीप।

कलत्रवन्तम् कलत्रम् अस्य अस्ति इति कलत्रवान्, तम् कलत्रवन्तम् कलत्र मतुप्, पत्नी वाला; वह जिसकी पत्नी है। 'वाला' के अर्थ में 'मतुप्' प्रत्यय है। इसी प्रकार के भाव की अभिव्यंजना महाकवि कालिदासकृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् में हुई है.

''परिग्रहबहुत्वेऽपि द्वे प्रतिष्ठे कुलस्य मे।

समुद्ररसना चोर्वी सखी च युवयोरियम्।।''

विशेष संस्कृत भाषा में लिङ्ग शब्द के अर्थ में नहीं, प्रत्युत शब्द में होता है। इसी कारण से 'पत्नी' अर्थ को प्रकट करने वाले 'कलत्रं' 'दारा' 'पत्नी' इन तीन शब्दों का एक ही अर्थ होने पर भी लिंग भिन्न-भिन्न हैं। 'कलत्रं' नपुंसकलिंग है, 'दारा' पुल्लिंग है और 'पत्नी' स्त्रीलिंग है। परन्तु इन तीनों भिन्न-भिन्न शब्दों का अर्थ स्त्रीलिंग 'पत्नी' नपुंसकलिंग है।